डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 23-05-2020

विषय- द्वितीय पत्र (श्रीमद्भगवद्गीता)

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति । शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्य: से मे प्रिय:।।17।।

अर्थ - जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है ,न शोक करता है, न कामना करता है तथा जो शुभ और अशुभ संपूर्ण कर्मों का त्यागी है --वह भक्ति युक्त पुरुष मुझको प्रिय है।17।।

प्रश्न- कभी हर्षित न होना क्या है? और इस लक्षण से क्या भाव दिखलाया गया है?

उत्तर- 'इष्ट' वस्तु की प्राप्ति में और 'अनिष्ट' के वियोग में प्राणियों को हर्ष हुआ करता है, अतः किसी भी वस्तु के संयोग- वियोग से अंतःकरण में हर्ष का विकार न होना ही कभी हर्षित न होना है। ज्ञानी भक्त में हर्ष रूप विकार का सर्वथा अभाव दिखलाने के लिए यहां इस लक्षण का वर्णन किया गया है ।अभिप्राय यह है कि भक्त के लिए सर्वशक्तिमान सर्वाथा परम दयालु भगवान ही परम प्रिय वस्तु है और वह उन्हें सदा के लिए प्राप्त है ।सदा सर्वदा परमानंद में स्थित रहता है। संसार की किसी वस्तु में उसका किंचित मात्र भी राग-द्वेष नहीं होता। इस कारण लोक दृष्टि से होने वाले किसी प्रिय वस्तु के संयोग से या अप्रिय के वियोग से उसके अंतःकरण में कभी किंचित मात्र भी हर्ष का विकास नहीं होता।

भगवान का भक्त द्वेष नहीं करता यह कहने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर-भगवान् का भक्त संपूर्ण जगत् को भगवान् का स्वरूप समझता है। इसलिए उसका किसी भी वस्तु या प्राणी में कभी किसी भी कारण से द्वेष नहीं हो सकता।उसके अंतःकरण में भेदभाव का सदा के लिए सर्वथा अभाव हो जाता है।

प्रश्न- भगवान् का भक्त कभी शोक नहीं करता, इसका क्या भाव है?

उत्तर- हर्ष की भांति ही उसमें शोक का विकार भी नहीं होता। अनिष्ट वस्तु की प्राप्ति में और इष्ट के वियोग में प्राणियों को शोक हुआ करता है। भगवत् भक्त को लीलामय परम दयालु परमेश्वर की दया से भरे हुए किसी भी विधान में कभी प्रतिकूलता प्रतीत ही नहीं होती। भगवान् की लीला का रहस्य समझने के कारण वह हर समय उनके परमानंद स्वरूप के अनुभव में मग्न रहता है ।अतः उसे शोक कैसे हो सकता है। अर्थात उन्हें शोक नहीं होता है।

एक बात और भी है -सर्वव्यापी, सर्वाधार भगवान् ही उसके लिए सर्वोत्तम परम प्रिय वस्तु है और उनके साथ उसका कभी भी वियोग होता नहीं, तथा सांसारिक वस्तुओं की उत्पत्ति- विनाश में उसका कुछ बनता -बिगड़ता नहीं । इस कारण भी लोक दृष्टि से होने वाले प्रिय वस्तुओं के वियोग से या अप्रिय के संयोग से उसे किसी प्रकार का शोक नहीं हो सकता।

प्रश्न --भगवान का भक्त कभी किसी वस्तु की भी आकांक्षा क्यों नहीं करता?

उत्तर --मनुष्य के मन में जिन इष्ट वस्तुओं के अभाव का अनुभव होता है ,वह उन्हीं वस्तुओं की आकांक्षा करता है। भगवान् के भक्तों को साक्षात् भगवान् की प्राप्ति हो जाने के कारण वह सदा के लिए परम आनंद और परम शांति में स्थित होकर पूर्ण काम हो जाता है, उसके मन में कभी किसी वस्तु के अभाव का अनुभव होता ही नहीं ,उसकी संपूर्ण आवश्यकताएं नष्ट हो जाती है, वह अचल -प्रतिष्ठा में स्थित हो जाता है ,इसलिए उसके अंतःकरण में सांसारिक वस्तुओं की आकांक्षा होने का कोई कारण ही नहीं रह जाता।

प्रश्न-' शुभाशुभ' शब्द किन कर्मों का वाचक है और भगवान् के भक्तों को उनका परित्यागी कहने का क्या अभिप्राय है?

उत्तर -यज्ञ ,दान ,तप और वर्णाश्रम के अनुसार जीविका तथा शरीर निर्वाह के लिए किए जाने वाले शास्त्र विहित कर्म का वाचक यहां 'शुभ' शब्द है, और झूठ, कपट, चोरी, हिंसा ,व्यभिचार आदि पाप कर्म का वाचक 'अशुभ' शब्द है ।भगवान् का ज्ञानी भक्त इन दोनों प्रकार के कर्म का त्यागी होता है, क्योंकि उसके शरीर, इंद्रिय और मन के द्वारा किए जाने वाले समस्त शुभ कर्मों को वह भगवान के समर्पण कर देता है ।उनमें उसकी किंचित मात्र भी ममता ,आसक्ति या फलेच्छा नहीं रहती, इसीलिए ऐसे कर्म, कर्म ही नहीं माने जाते (4/20) और राग ,द्वेष का अभाव हो जाने के कारण पापकर्म उसके द्वारा होते ही नहीं, इसलिए उसे 'शुभाशुभ का परित्यागी' कहा गया है ।